# जुलाई माह की साधना

## योगिनी एकादशी पर वीणाख्या योगिनी साधना

भारतीय साधनात्मक साहित्य का एक विषद खण्ड केवल योगिनी साधना के प्रति ही समर्पित है।

ब्रह्मांड का केंद्र शिव हैं। शंकराचार्य कृत 'सौन्दर्यलहरी' का प्रथम श्लोक ही शक्ति की अभ्यर्थना से प्रारम्भ होता है-

**"शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुं।**
**न चेदेवं देवो न खलु कुशलः स्पन्दितुमपि।।"**

**अर्थात्** शक्ति से युक्त होने पर ही शिव सृजन का सामर्थ्य रखते हैं, शक्ति के बिना शिव भी निष्क्रिय हैं। इसी पराशक्ति का विराट, रहस्यमय और पूर्ण स्वरूप है-'चौसठ योगिनियाँ'।

सदियों से 'योगिनी' शब्द के अनेक अर्थ रहे हैं, लेकिन इसकी जड़ें भारतीय संस्कृति में गहराई से जुड़ी हैं, जहाँ योगिनियाँ केवल योगाभ्यास करने वाली ही नहीं, बल्कि अलौकिक शक्तियों से युक्त शक्तिशाली, रहस्यमयी, आध्यात्मिकता और श्रद्धा के संगम से भरी आकर्षक हस्तियाँ हैं। प्रत्येक योगिनी के पास एक विशेष ऊर्जा और एक विशेष जागरण का द्वार विद्यमान रहता है कहीं अंतर्ज्ञान, कहीं साहस, कहीं गहन आध्यात्मिक स्वतंत्रता।

योगिनियां न केवल दिव्य आत्मा होती हैं, बल्कि उन्हें अप्रत्याशित और उग्र स्वभाव का भी माना जाता है। योगिनी भौतिक और आध्यात्मिक जगत के बीच एक सेतु का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो पवित्रता और आध्यात्मिकता की पारंपरिक धारणाओं को चुनौती देती थीं। योगिनी का यह रूप बताता है कि जब साधक अपने भीतर के अंधकार, भय, मोह और अज्ञान का सामना करता है, तभी वह वास्तविक शक्ति को प्राप्त कर पाता है।

साधक ही नहीं, प्रत्येक सामान्य मनुष्य के जीवन में भावनाएं होती हैं, जो उसे सहज प्रवाह देती हैं। यदि भावनाओं को ही निकाल दिया जाये, तो मनुष्य व यंत्र में अंतर ही क्या रह जायेगा? किन्तु मनुष्य यंत्र नहीं हो सकता। पहले ही इस युग की सभ्यता ने मनुष्य को एक यंत्र बनाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी जिसके परिणाम की अधिक व्याख्या की कोई आवश्यकता नहीं है।

यह सत्य है, कि योगिनी की प्रस्तुति एक प्रेमिका रूप में होती है। किन्तु यह आवश्यक नहीं कि प्रेमिका शब्द से सदैव वासनात्मक अर्थ ही अभिप्रेत हो। योगिनी को प्रेमिका रूप में सिद्ध करने का तात्पर्य होता है, एक ऐसी स्त्री, जो अपने प्रिय पर अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देने में ही अपना सुख मानती हो और उसे जीवन का समस्त सुख-वैभव, आनन्द के साथ तीक्ष्ण बल, ओज और संघर्ष करने की ऊर्जा प्रदान करती है।

योगिनी अपने सिद्ध साधक में भर देती है ऐसा तेज, बल जिससे सामने वाला प्रभावित हुये बिना रह ही नहीं सकता। आकाश में गिरी कड़कड़ाती बिजली जैसा यौवन या आंखों में मस्ती के वे लाल डोरे, जो सही अर्थों में किसी पुरूष के यौवन का प्रमाण हो या फिर तना हुआ सीना, सब कुछ उतार देती है यह योगिनी, जिससे साधक छा जाये सारे वातावरण में.....।

उक्त साधना योगिनी एकादशी पर जो कि दिनांक 10 जुलाई 2026 को सम्पन्न करें, साधना प्रक्रिया जून माह की पत्रिका के पृष्ठ संख्या 25 से 26 पर अंकित है।